I.G.N.O.U. Based

NEERAJ®

B.H.D.E.-101

हिन्दी गद्य

By: Manish Kumar

Question Bank Cum Chapterwise Reference Book
Including **Many Solved Question Papers**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Sales Office:
1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph.: 011-23260329, 45704411,
23244362, 23285501
E-mail: info@neerajignoubooks.com
Website: www.neerajignoubooks.com

MRP ₹ 280/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajignoubooks.com**
Website: **www.neerajignoubooks.com**

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only	*Typesetting by:* Competent Computers	*Printed at:* Novelty Printer

Notes:

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.*
9. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
10. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website ***www.neerajignoubooks.com****. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).*
To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website ***www.neerajignoubooks.com.***
No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.
We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)
1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006
Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: **info@neerajignoubooks.com** *Website:* **www.neerajignoubooks.com**

CONTENTS

हिन्दी गद्य

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2018 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2017 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2016 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2016 (Solved)	1-3

Chapterwise Reference Book

क्रम सं.		पृष्ठ
	हिन्दी गद्य का स्वरूप और विकास	
1.	हिन्दी गद्य का विकास	1
2.	हिन्दी गद्य की विविध विधाएँ	6
	हिन्दी कहानी	
3.	हिन्दी कहानी : स्वरूप और विकास	15
4.	उसने कहा था (चन्द्रधर शर्मा गुलेरी) : वाचन	21
5.	उसने कहा था : विश्लेषण और मूल्यांकन	25
6.	शतरंज के खिलाड़ी (प्रेमचन्द) : वाचन और विश्लेषण	30
7.	शरणदाता (अज्ञेय) : वाचन और विश्लेषण	36
8.	ठेस (फणीश्वरनाथ रेणु) : वाचन और विश्लेषण	43
9.	वापसी (उषा प्रियंवदा) : वाचन और विश्लेषण	48
10.	भैया एक्सप्रेस (अरुण प्रकाश) : वाचन और विश्लेषण	53

क्रम सं.	अध्याय	पृष्ठ
	हिन्दी उपन्यास	
11.	हिन्दी उपन्यास : स्वरूप और विकास	61
12.	'निर्मला' (प्रेमचन्द) : वाचन और व्याख्या-I	68
13.	'निर्मला' (प्रेमचन्द) : वाचन और व्याख्या-II	77
14.	'निर्मला' : कथावस्तु	88
15.	'निर्मला' : चरित्र-चित्रण	94
16.	'निर्मला' : परिवेश और संरचना-शिल्प	101
17.	'निर्मला' : प्रतिपाद्य और प्रेमचन्द का वैशिष्ट्य	107
	हिन्दी एकांकी और अन्य दृश्य विधाएँ	
18.	हिन्दी एकांकी और अन्य दृश्य विधाएँ : स्वरूप और विकास	111
19.	श्रव्य-दृश्य माध्यमों के लिए लेखन	115
20.	कौमुदी महोत्सव (डॉ. रामकुमार वर्मा) : वाचन	118
21.	कौमुदी महोत्सव : विश्लेषण और मूल्यांकन	123
22.	रीढ़ की हड्डी (जगदीशचन्द्र माथुर) : वाचन और विश्लेषण	128
23.	सबसे सस्ता गोश्त (असगर वजाहत) : वाचन और विश्लेषण	135
24.	रात बीतने तक (मोहन राकेश) : वाचन और विश्लेषण	139
25.	'घीसा' की पटकथा (मन्नू भंडारी) : वाचन और विश्लेषण	144
	हिंदी नाटक	
26.	हिंदी नाटक : स्वरूप और विकास	149
27.	'ध्रुवस्वामिनी' (जयशंकर प्रसाद) : वाचन और व्याख्या	154

क्रम सं.	अध्याय	पृष्ठ
28.	'ध्रुवस्वामिनी' : कथानक	160
29.	'ध्रुवस्वामिनी' : चरित्र-चित्रण	165
30.	'ध्रुवस्वामिनी' : परिवेश तथा संरचना-शिल्प	168
31.	'ध्रुवस्वामिनी' : प्रतिपाद्य और अभिनेयता	174
32.	'ध्रुवस्वामिनी' : रचना दृष्टि की नवीनता और सार्थकता	179
	हिन्दी निबंध और अन्य गद्य विधाएँ	
33.	हिन्दी कथेतर गद्य : स्वरूप और विकास	182
34.	स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र) : वाचन और विश्लेषण	185
35.	नाखून क्यों बढ़ते हैं? (हजारी प्रसाद द्विवेदी) : वाचन	189
36.	नाखून क्यों बढ़ते हैं? : विश्लेषण और मूल्यांकन	192
37.	घीसा (महादेवी वर्मा) : वाचन और विश्लेषण	196
38.	पगडंडियों का जमाना (हरिशंकर परसाई) : वाचन और विश्लेषण	200
39.	त्रिलोचन (फणीश्वरनाथ रेणु) : वाचन और विश्लेषण	204
40.	'सिंध में सत्रह महीने' (नागार्जुन) : वाचन और विश्लेषण	207

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

(June – 2019)

(Solved)

ऐच्छिक पाठ्यक्रम : हिन्दी गद्य

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

*नोट : **किन्हीं पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक **समान** हैं।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए

(क) यह है आजादी! पहले विदेशी सरकार लोगों के कैद करती थी कि वे आजादी के लिए लड़ना चाहते थे; अब अपने ही भाई अपनों को तनहाई कैद दे रहे हैं, क्योंकि वे आजादी के लिए ही लड़ाई रोकना चाहते हैं। फिर मानव प्राणी का स्वाभाविक वस्तुवाद जागा, और उन्होंने गैराज, कोठरी, आँगन का निरीक्षण इस दृष्टि से आरंभ किया कि क्या-क्या सुविधाएं वह अपने लिए कर सकते हैं।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-7, पृष्ठ-37, 'कहानी की संदर्भ सहित व्याख्या, उद्धरण 1'

(ख) पाँच-छह दिन तक जियाराम ने पेट भर भोजन नहीं किया। कभी दो-चार कौर खा लेता, कभी कह देता भूख नहीं है। उसके चेहरे का रंग उड़ा रहता था। राते जागते कटतीं, प्रतिक्षण थानेदार की शंका बनी रहती। यदि वह जानता कि मामला इतना तूल खींचेगा तो कभी ऐसा न करता। उसने तो समझा था कि किसी चोर पर शुबहा होगा। मेरी तरफ किसी का ध्यान भी नहीं जाएगा, पर अब भांडा फूटता हुआ मालूम होता था। अभागा थानेदार जिस ढंग से छानबीन कर रहा था, उससे जियाराम को बड़ी शंका हो रही थी।

उत्तर सन्दर्भ प्रस्तुत पंक्तियों को उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द के सामाजिक बोधपरक उपन्यास 'निर्मला' से लिया गया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में जियाराम घबराया हुआ है, क्योंकि पुलिस छानबीन करने घर तक आ गयी है। इसी संदर्भ का उल्लेख करते हुए लेखक कहते हैं

व्याख्या जियाराम को पांच-छह दिन खाना खाये हो गए हैं। कभी खाता है और कभी नहीं खाता है। वह परेशान है, घबराया हुआ है कि उसने जो गहनों की संदूक चुरा ली है। कहीं वह पकड़ा ना जाये। जियाराम मन ही मन यह सोच रहा है, मुझे क्या पता था कि यह मामला इतना बिगड़ जायेगा। उसे तो यह लगता था कि चोरी के मामले कोई चोर पकड़ में आ जायेगा और किसी को कुछ पता भी नहीं चलेगा। मेरी तरफ किसी का ध्यान नहीं जायेगा। पर अब ऐसा लग रहा है कि सबको पता चल जायेगा, जियाराम को नींद नहीं आती है क्योंकि अभागा थानेदार जिस तरह से छानबीन कर रहा था, उसे शंका हो रही है कि अब वह पकड़ा जायेगा और सारा भांडा फूट जायेगा।

विशेष घर के हालात को देखते हुए जियाराम यह चोरी का कदम उठाता है। निर्मला सब जानते हुए भी कि चोरी जियाराम ने की है, वह किसी को कुछ नहीं बताती।

(ग) मौर्य! लो अपना शस्त्र! (फेंक देते हैं) यह कलंक इसी समय दूर करता हूँ। राजमंत्री राक्षस की राजनीति के कुचक्र में आने वाले चंद्रगुप्त! क्या मैं अपनी शिखा खोलकर विनाश की प्रतिज्ञा करूँ? जिस ब्राह्मण की शिखा सर्पिणी ने नंदवंश को एक ही दंशन में समाप्त कर दिया, क्या मौर्य भी उस सर्पिणी पर हाथ रखना चाहता है? जिस चंद्रगुप्त को अपना आत्मीय समझकर कुसुमपुर के सिंहासन पर आरूढ़ कराया, उसी चंद्रगुप्त के विनाश से क्या श्मशान को सुसज्जित करूँ।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-20, पृष्ठ-122, 'उद्धरण 1'

(घ) राजा का भय मंदा का गला नहीं घोंट सकता। तुम लोगों को यदि कुछ भी बुद्धि होती, तो इस अपनी कुल मर्यादा, नारी को, शत्रु के दुर्ग में यों न भेजते। भगवान ने स्त्रियों को उत्पन्न करते ही अधिकारों से वंचित नहीं किया है किन्तु तुम लोगों की दस्यु-वृत्ति ने उन्हें लूटा है। इस परिषद् से मेरी प्रार्थना है कि आर्य समुद्रगुप्त का विधान तोड़कर जिन लोगों ने राजकिल्विष किया हो, उन्हें दंड मिलना चाहिए।

उत्तर संदर्भ प्रस्तुत पंक्तियां जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक से ली गई हैं। इस नाटक के माध्यम से प्रसाद जी ने यह व्यक्त किया है कि स्त्रियों को भी पुरुषों के सम्मान अधिकार प्राप्त होने चाहिए।

व्याख्या 'ध्रुवस्वामिनी' रामगुप्त पर व्यंग्य करती है कि आप एक अयोग्य राजा हैं। यदि आपको अपनी पत्नी के मान-सम्मान का व्याख्या होता, जो कुल की मर्यादा होती है, उसे ऐसे न शत्रु

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

के पास उपहारस्वरूप भेजते। भगवान ने स्त्रियों को उत्पन्न होते ही ऐसा नहीं बनाया है, उन्हें भी अधिकार है सम्मानपूर्वक जीवन जीने का। किन्तु तुम जैसे राजाओं ने अपनी पत्नी को दासी समान समझा है और इन्हीं प्रवृत्तियों ने स्त्रियों से मनमाना व्यवहार किया है वह परिषद के सदस्यों से प्रार्थना करती है कि समुद्रगुप्त के विधान को तोड़ने वाले कायरों और क्लीव को दण्ड मिलना चाहिए।

विशेष (1) यहां एक कायर पति एवं पतित शासक के भाव को प्रदर्शित किया गया है।

(2) अंश की भाषा सरल एवं सहज है।

(ङ) गुरु साहब न लें, तो घीसा रात भर रोएगा-छुट्टी भर रोएगा। ले जाएँ तो वह रोज नहा-धोकर पेड़ के नीचे पढ़ा हुआ पाठ दोहराता रहेगा और छुट्टी के बाद पूरी किताब पट्टी पर लिखकर दिखा सकेगा। और तब अपने स्नेह-प्रगल्भ उस बालक के सिर पर हाथ रखकर मैं भावातिरेक से ही निश्चय हो रही। उस तट पर किसी गुरु को किसी शिष्य से कभी ऐसी दक्षिणा मिली होगी, ऐसा मुझे विश्वास नहीं; परंतु उस दक्षिणा के सामने संसार में अब तक सारे आदान-प्रदान फीके जान पड़े।

उत्तर संदर्भ ये पंक्तियां महादेवी जी की 'घीसा' पटकथा से ली गयी हैं। इस पटकथा में घीसा केन्द्रीय पात्र है, जो अपना कुर्ता बेचकर महादेवी जी के लिए तरबूज लेकर आता है। वह उनसे जिद करता है कि वह उसे ले लें, जिसे देखकर महादेवी जी भाव-विभोर हो जाती है।

व्याख्या घीसा अपना कुर्ता देकर तरबूज लेकर आता है और वह चाहता है कि गुरु साहब उस तरबूज को ले। अगर गुरु साहब नहीं लेते हैं, तो घीसा रात भर रोयेगा जब तक महादेवी जी छुट्टी से लौटकर नहीं आती, तब तक रोयेगा और दुखी रहेगा। घीसा महादेवी जी से कहता है कि यदि वह उसे ले लेती है, तो वह रोज नहा-धोकर, साफ-सुथरा होकर पेड़ के नीचे पढ़ा हुआ पाठ दोहराएगा और छुट्टी के बाद जब महादेवी जी लौटकर आयेगी, तब पूरी किताब का पढ़ा हुआ पाठ, पट्टी पर लिखकर दिखायेगा। यह सब देखकर महादेवी जी भावुक हो जाती हैं और 'घीसा' के सिर पर हाथ फेरते हुए सोचती हैं कि इस संसार में शायद ही किसी शिष्य ने अपने गुरु को ऐसी दक्षिणा दी होगी। यदि दिया भी होगा तो इस दक्षिणा के आगे फीका पड़ जायेगा।

विशेष-(1) यहाँ भावना प्रधान भाषा का प्रयोग किया गया है।

(2) भाषा सरल और सहज है।

(3) गुरू-शिष्य परंपरा की महत्ता बताई गई है।

प्रश्न 2. 'उसने कहा था' कहानी की विशिष्टता बताइए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-4, पृष्ठ-23, प्रश्न-1

प्रश्न 3. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के प्रतिपाद्य का विवेचन कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-6, पृष्ठ-34, प्रश्न 2

प्रश्न 4. निर्मला' उपन्यास के आधार पर निर्मला का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-15, पृष्ठ-98-99, प्रश्न 3

प्रश्न 5. नुक्कड़ नाटक से आप क्या समझते हैं? नुक्कड़ नाटक की दृष्टि से 'सबसे सस्ता गोश्त' का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-23, पृष्ठ-136, प्रश्न 1, पृष्ठ-136, 'मूल्यांकन'

प्रश्न 6. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की विशेषताएं बताइए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-32, पृष्ठ-179, 'समस्या नाटक के रूप में ध्रवस्वामिनी', 'हिन्दी में समस्या नाटक की शुरुआत', 'प्रसाद' जी का बदलता दृष्टिकोण', 'ध्रुवस्वामिनी में समस्या नाटक की विशेषताएं', पृष्ठ-181, प्रश्न 1, 2

प्रश्न 7. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' के अंतर्वस्तु पर प्रकाश डालिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-36, पृष्ठ-192, 'अंतर्वस्तु'

प्रश्न 8. 'शरणदाता' कहानी की विशेषताएं बताइए।

उत्तर शरणदाता कहानी का संदर्भ भारतवर्ष की स्वतंत्रता के अवसर पर घटित भारत-पाक विभाजन का है। ब्रिटिश शासन की कूटनीति और राजनैतिक नेताओं की व्यक्तिगत महत्वकांक्षाओं के कारण यह विभाजन धर्म को आधार बनाकर किया गया था।

शरणदाता कहानी की विशेषताएं 'शरणदाता' अज्ञेय जी की लंबी कहानियों में से एक है, जिसका कथानक तेरह खण्डों में विन्यस्त है। 'शरणदाता' की आलोचना प्राय: कहानी के अंतिम पंक्ति को केन्द्र बनाकर की जाती है। वह पंक्ति है "उन्होंने चिट्टी की छोटी सी गोली बना चुटकी से उड़ा दी। मानो जैबू ने जिस इन्सानियत की दुहाई देते हुए अल्पसंख्यकों की सहायता का आग्रह किया था, उसी को चुटकी से उड़ा दिया गया हो। पूरी कहानी में मानवीयता के प्रति जिस विश्वास का भाव उभरता है वह इस एक पंक्ति से आश्वस्त हो जाता है। कहानी का अंत इस एक पंक्ति को लिखे बिना भी हो सकता था, परन्तु इस क्रिया से विभाजन त्रासदी से त्रस्त लोगों की मानसिकता स्पष्ट होती है। जैबू के प्रयत्न से ही देविन्दर लाल विषाक्त भोजन से बच जाता है। परन्तु देविन्दरलाल द्वारा उसके पत्र को गोली बनाकर उड़ा देना भी सहज स्थिति नहीं है। देविन्दर लाल अत्यन्त संवेदनशील है। जीवन और स्थितियों की उन्हें अच्छी परख है। वे कोई भी कार्य कोई भी निर्णय आवेश में नहीं करते। धैर्य और स्थिरता उनके व्यक्तित्व की विशेषताएं हैं। कहानी के अंत में लेखक का मानवता की रक्षा करने का आग्रह और विश्वास उसी के माध्यम से प्रकट होता है। कंठ-स्वर की सहायता से पात्रों के चरित्रांकन का यह प्रयास कथाकार के कौशल का परिचायक है।

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

ऐच्छिक पाठ्यक्रम : हिन्दी गद्य

हिन्दी गद्य का स्वरूप और विकास

हिन्दी गद्य का विकास

1

परिचय

हिन्दी साहित्य का इतिहास काफी पुराना है। ऐसा माना जाता है कि हिन्दी साहित्य का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। हिन्दी साहित्य के इतिहास को सामान्यत: चार भागों में बांटा जा सकता है आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिक काल। हिन्दी गद्य का विकास आधुनिक काल में हुआ। हिन्दी गद्य के विकास में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा प्रेमचन्द का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आधुनिक काल से पूर्व का साहित्य अधिकांशत: पद्य में ही है। हिन्दी गद्य के विकास में भारतेन्दु तथा प्रेमचन्द के अतिरिक्त अन्य लेखकों का भी योगदान रहा है।

प्रस्तुत अध्याय हिन्दी गद्य के विकास से संबंधित है। अध्याय में निम्नलिखित विषयों की जानकारी दी गई है गद्य साहित्य, हिन्दी गद्य की पृष्ठभूमि, ब्रजभाषा गद्य, खड़ी बोली गद्य, हिन्दी गद्य का विकास, हिन्दी गद्य के विकास के कारण, प्रारंभिक गद्य लेखन, अंग्रेजों की भाषा नीति, भारतेन्दु युग (1875-1900), द्विवेदी युग (1900-1920) तथा प्रेमचन्द और उनके बाद।

अध्याय का विहंगावलोकन

गद्य साहित्य

साहित्यिक भाषा में कबीरदास, सूरदास तथा मीरा की रचनाओं को काव्य या पद्य कहा जाता है, जबकि उपन्यास, कहानी एवं निबंध को हम गद्य कह सकते हैं। काव्य में गेयता तथा लय होती है, जबकि गद्य की भाषा व्याकरण के अनुरूप होती है। काव्य रचना आरंभ से ही साहित्य का महत्त्वपूर्ण भाग रही है। भारत में जहां 'रामायण' और 'महाभारत' जैसे महाकाव्यों की रचना हुई, वहीं यूनान में 'इलियड' तथा 'औडेसी' जैसे महाकाव्यों की रचना हुई। नाटकों में भी काव्य की भाषा का ही अधिक प्रयोग हुआ है। प्रश्न यह उठता है कि आधुनिक युग से पूर्व साहित्यिक रचनाएं गद्य की बजाय पद्य में ही क्यों होती रहीं?

इसका कारण यह था कि काव्य को याद रखना अधिक सरल था और मौखिक परंपरा से साहित्य को आगे बढ़ाने में काव्य की भाषा अधिक सहायक थी।

हिन्दी गद्य की पृष्ठभूमि

19वीं शताब्दी से पूर्व हिन्दी भाषा में गद्य में रचनाएं अधिक नहीं थीं। 16वीं तथा 17वीं सदी में साहित्य में खड़ी बोली का प्रयोग बहुत कम हुआ, क्योंकि इस समय ब्रज भाषा साहित्य की भाषा थी। काफी समय तक साहित्य की रचना ब्रज भाषा में ही होती रही।

ब्रजभाषा गद्य

चूँकि ब्रजभाषा साहित्यिक भाषा थी, इसलिए इस भाषा के बोलचाल रूप का प्रयोग भी साहित्य में होता था। विद्वानों की भाषा आम आदमियों की भाषा से अलग होती है। जनसाधारण की भाषा बोलचाल की भाषा होती है। गद्य के द्वारा लेखक अपना संदेश जनता तक आसानी से पहुँचा सकता है। काव्य ग्रंथों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए टीकाएं लिखी गई हैं। ये टीकाएं भी गद्य में ही लिखी गई हैं। पद्य लेखन के साथ-साथ गद्य का लेखन भी होता रहा।

खड़ी बोली गद्य

खड़ी बोली जनसाधारण के बोलचाल की भाषा थी। धीरे-धीरे गद्य की रचनाएं भी इसमें होने लगीं। खड़ी बोली के विकास में तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का भी योगदान रहा। 14वीं शताब्दी में खड़ी बोली दिल्ली तथा उसके आस-पास के इलाकों में बोली जाने लगी थी। मुगलकाल में जनता से सम्पर्क साधने के लिए भी खड़ी बोली का ही उपयोग किया गया। मुगलों ने फारसी भाषा को राजकाज की भाषा बताया। खड़ी बोली तथा फारसी के मिश्रण से एक नई भाषा शैली का जन्म हुआ। इस नई शैली को हिन्दवी या उर्दू नाम दिया गया। 14वीं शताब्दी में अमीर खुसरो ने खड़ी बोली में अनेक पहेलियों और मुकरियों की रचना की।

हिन्दी गद्य का विकास

खड़ी बोली के विकास में परिस्थितियों, संस्थाओं तथा व्यक्तियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

हिन्दी गद्य के विकास के कारण

अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना के साथ भारत में जो परिवर्तनों का सिलसिला प्रारंभ हुआ, उनमें से कुछ परिवर्तनों का संबंध हिन्दी गद्य के विकास से भी है।

ईसाई मिशनरियाँ अंग्रेजों के साथ भारत में ईसाई धर्म प्रचारक भी आये। अंग्रेजी शासन की स्थापना के साथ ईसाई धर्म प्रचारकों की गतिविधियां भी तेज हो गईं। 19वीं शताब्दी में ईसाई धर्म प्रचारकों ने ईसाई धर्म के प्रचार के लिए हिन्दी गद्य में कई पुस्तकें तैयार करवायीं।

नवीन आविष्कार भारत में अपने साम्राज्य को सुदृढ़ बनाने के लिए अंग्रेजों ने मुद्रण, यातायात तथा संचार के साधनों का प्रयोग किया। इनसे जनसामान्य के जीवन में बड़ा परिवर्तन आया।

शिक्षा का विस्तार 1935 से पूर्व भारत में शिक्षा संस्कृत और फारसी भाषा में दी जाती थी। राजा राममोहन राय ने अंग्रेजी शिक्षा का समर्थन किया। अंग्रेजी शिक्षा का भारतीयों को लाभ भी हुआ। अंग्रेजी शिक्षा से भारतीयों को पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति की जानकारी प्राप्त हुई, इससे भारतीयों में एक नई चेतना जाग्रत हुई।

समाज-सुधार आन्दोलन सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए समाज सुधारकों ने जनता की भाषा में अपने मत का प्रचार किया। राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज के द्वारा अपने मत का प्रचार किया। स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'आर्य समाज' की स्थापना की। स्वामी दयानंद ने अपने ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना गद्य में ही की। श्रद्धा राम फुल्लौरी तथा नवीन चन्द्र राय ने भी समाज सुधार के लिए हिन्दी गद्य का ही सहारा लिया।

हिन्दी गद्य

पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हिन्दी का सबसे पहला समाचार-पत्र था 'उदंत मार्तण्ड'। 30 मई, 1826 से पं. जुगल किशोर शुक्ल ने कलकत्ता से इसका प्रकाशन आरंभ किया। उस समय हिन्दीभाषी पाठकों की संख्या कम होने के कारण 4 दिसम्बर, 1827 ई. को यह पत्र बन्द हो गया। हिन्दी का दूसरा पत्र था 'बगदूत', जिसका प्रकाशन 9 मई, 1829 से कलकत्ता से प्रारंभ हुआ। 1834 में प्रकाशित 'प्रजामित्र' तीसरा हिन्दी समाचार-पत्र था। हिन्दी भाषी क्षेत्र से सबसे पहला समाचार-पत्र 1844 में निकला, जिसका नाम 'बनारस' था।

प्रारंभिक गद्य लेखन

फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना 1800 ई. में हुई। इस कॉलेज के अध्यापक जान गिलक्राइस्ट ने हिन्दी और उर्दू में पुस्तकें लिखने का प्रयत्न किया। इन्होंने कई मुंशियों की नियुक्ति की। भाषा मुंशियों में सबसे प्रमुख थे श्री लल्लू लाल जी और पं. सदल मिश्र। इन्होंने हिन्दी में गद्य पुस्तकें लिखीं। इसी समय मुंशी सदा सुखलाल जी ने भागवत कथा का 'सुख सागर' नाम से भाषांतर किया तथा मुंशी इंशाअल्ला खां ने 'रानी केतकी की कहानी' लिखी। हिन्दी गद्य के आरंभिक विकास में इन चारों लेखकों का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

अंग्रेजों की भाषा नीति

अंग्रजों के आगमन से पूर्व राजकाज की भाषा फारसी थी। 1836 तक अदालत की भाषा भी फारसी ही थी। 1836 में एक 'इश्तहारनामे के द्वारा अदालत की भाषा हिन्दी कर दी गई। लोगों के विरोध करने पर 1837 में अदालती भाषा उर्दू कर दी गई। ऐसे समय में कुछ लोगों ने हिन्दी के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिनमें प्रमुख हैं राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' तथा राजा लक्ष्मण सिंह।

राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' (सन 1823-1845) राजा शिवप्रसाद शिक्षा विभाग में इंस्पेक्टर के पद पर नियुक्त थे। उन्होंने हिन्दी का समर्थन किया। सरकारी विभागों में हिन्दी को गंवारू भाषा और उर्दू को श्रेष्ठ भाषा माना जाता था। उन्होंने ठेठ हिन्दी का सहारा लिया। उन्होंने पण्डित श्री लाल और पण्डित वंशीधर को भी पुस्तक लेखन के कार्य पर लगाया।

राजा लक्ष्मण सिंह (सन 1826-1896) राजा लक्ष्मण सिंह ने हिन्दी और उर्दू को दो अलग-अलग भाषाएं माना। इन्होंने कालिदास के 'मेघदूत', 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' तथा 'रघुवंश' का अनुवाद किया। राजा लक्ष्मण सिंह ने हिन्दी गद्य को समृद्ध किया। राजा लक्ष्मण सिंह ने शुद्ध और संस्कृतनिष्ठ हिन्दी को आगे बढ़ाने का प्रयास किया। इस कार्य के लिए उन्होंने 1841 में 'प्रजाहितैषी' नामक पत्र भी निकाला।

भारतेन्दु युग (1875-1900)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म 2 सितम्बर, 1850 ई. को बनारस में हुआ था। इनके पिता गोपाल चन्द्र साहित्य के प्रेमी थे। इन्होंने 'नहुष वध' नाटक की रचना की थी। अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतेन्दु ने हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। इन्होंने 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' तथा 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' नामक पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। भारतेन्दु ने खड़ी बोली के गद्य को परिमार्जित रूप में प्रस्तुत किया। निबंध, नाटक तथा समालोचना आदि में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने एक नयी परंपरा का सूत्रपात किया। इनकी रचनाएं श्रृंगार, देशभक्ति, ईश्वर-भक्ति तथा सामाजिक अवस्था को दर्शाती हैं। 35 वर्ष की अल्पायु में 1885 में उनकी मृत्यु हो गयी। भारतेन्दु 'निज भाषा' के विकास के पक्षधर थे।

इस काल में नाटक, निबंध तथा उपन्यास आदि विधाओं के प्रारंभ से हिन्दी गद्य के विकास को पर्याप्त बल मिला। भारतेन्दु युग के लेखकों में कुछ कर गुजरने की ललक थी। भारतेन्दु युग में काव्य की भाषा ब्रजभाषा ही बनी रही।

द्विवेदी युग (1900-1920)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की प्रेरणा से लेखकों की एक मण्डली तैयार हो गयी। इस मण्डली के लेखकों ने अपने लेखों से हिन्दी गद्य को समृद्ध किया था। इस युग में लेखकों की दृष्टि हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अधिक थी, जिसके कारण इनकी भाषा में अनेक दोष नजर आते हैं। इसका कारण यह था कि अब अनूदित उपन्यासों को पढ़ने में लोगों ने रुचि दिखाई, परन्तु अनुदित करने वाले लेखकों ने हिन्दी की अच्छी जानकारी प्राप्त करना आवश्यक नहीं समझा।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी (1861-1938) इन्हें अपने निबंध और समालोचनाओं के कारण अधिक लोकप्रियता मिली। इनका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य भाषा का परिमार्जन करना था। द्विवेदी जी की कोशिश रहती थी कि खड़ी बोली में हिन्दी अपना मानक रूप ग्रहण करे। द्विवेदी जी राष्ट्रीय चेतना तथा नवजागरण की भावना को हिन्दी साहित्य के लिए आदर्श मानते थे। द्विवेदी जी ने मध्ययुगीन आदर्शों तथा रीतिकालीन कलारूपों को अस्वीकार कर दिया। द्विवेदी जी ने साहित्य को समाज से जोड़ा।

नाटक हिन्दी में नाटकों की शुरुआत भारतेन्दु युग में हो चुकी थी। भारतेन्दु युग के सभी रचनाकारों ने नाटकों की रचना की, परन्तु द्विवेदी युग में नाटकों का वैसा विकास नहीं हो पाया। इस काल में बांग्ला, अंग्रेजी तथा संस्कृत के नाटकों के अनुवाद किये गये। नाटकों के क्षेत्र में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य जयशंकर प्रसाद ने किया। उन्होंने नाटकों को साहित्यिक उत्कृष्टता प्रदान की।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

उपन्यास उपन्यास आधुनिक युग की प्रतिनिधि विधा है। उपन्यास को आधुनिक युग का महाकाव्य कहा गया है। भारतेन्दु युग से पूर्व श्रद्धाराम फिल्लौरी ने 'भाग्यवती' नामक उपन्यास लिखा। भारतेन्दु युग में ही श्रीनिवास दास ने 'परीक्षा गुरु', राधा कृष्णदास ने 'नि:सहाय हिन्दू', पं. बालकृष्ण भट्ट ने 'नूतन ब्रह्मचारी, मेहता लज्जाराम शर्मा ने 'स्वतंत्र रमा' तथा 'धूर्त रसिकलाल' जैसे उपन्यास लिखे।

हिन्दी गद्य का विकास द्विवेदी युग में पं. किशोरी लाल गोस्वामी ने कई उपन्यास लिखे। इन्होंने करीब 65 उपन्यास लिखे जिनमें प्रमुख हैं 'चपला तारा', 'तरुण तपस्विनी', 'रजिया बेगम', 'लीलावती' आदि। इसी युग में पं. अयोध्या सिंह उपाध्याय ने 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' (1899), और 'अधखिला फूल' जैसे उपन्यास लिखे। लज्जा राय मेहता ने 'हिन्दू गृहस्थ' तथा 'बिगड़े का सुधार' तथा ब्रजनन्दन सहाय ने 'राधाकांत' उपन्यास लिखे।

कहानी भारत में आधुनिक कहानी की कहानी अधिक पुरानी नहीं है। मुंशी इंशाअल्ला खां की 'रानी केतकी की कहानी' तथा राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की 'राजा भोज का सपना' कहानी लिखने के छिट-पुट प्रयास थे। हिन्दी कहानी की रचना का समय 20वीं शताब्दी से प्रारंभ होता है जब प्रेमचन्द और जयशंकर प्रसाद (1900 ई.) ने कहानी लिखना प्रारंभ किया।

निबंध और समालोचना निबंध विधा का विकास भारतेन्दु युग में ही हो चुका था। इस युग के निबंधों में राष्ट्र और समाज के प्रति चिन्ता के अतिरिक्त विनोद प्रवृत्ति भी दिखाई देती है। बाल मुकुन्द गुप्त के निबंधों में हमें विनोद प्रवृत्ति दिखाई देती है। बाल मुकुन्द गुप्त ने सामयिक और राजनीतिक परिस्थितियों को लेकर कई निबंध लिखे हैं।

द्विवेदी युग में समालोचना का भी प्रारंभ हुआ। वास्तव में समालोचना की वास्तविक शुरुआत द्विवेदी काल में ही हुई। इस समय आलोचना के सैद्धान्तिक पक्ष से सम्बन्धित कई निबंध लिखे गये। द्विवेदी युग में समीक्षा को जिन विद्वानों ने लोकप्रिय बनाया, उनमें प्रमुख हैं श्याम सुन्दर दास, पद्मसिंह शर्मा तथा बाबू गुलाब राय, परन्तु समीक्षा के क्षेत्र में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किया।

प्रेमचन्द और उनके बाद

द्विवेदी युग में भाषा के परिमार्जन का महत्त्वपूर्ण कार्य किया गया। द्विवेदी युग के बाद गद्य साहित्य को प्रेमचन्द ने एक नई दिशा दी। प्रेमचन्द के उपन्यासों तथा कहानियों में नवीनता दिखाई देती है। प्रेमचन्द ने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध तथा जीवनियों के अतिरिक्त अनुवाद का कार्य भी किया। प्रेमचन्द ने लगभग 300 कहानियों की रचना की। प्रेमचन्द ने समाज एवं परिवार की किसी-न-किसी समस्या को ही अपनी कहानियों का आधार बनाया है। प्रेमचन्द की श्रेष्ठ कहानियां हैं 'ईदगाह', 'कफन', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'पूस की रात', 'बड़े घर की बेटी', 'पंचपरमेश्वर', 'नमक का दरोगा', 'दूध का दाम आदि। उपन्यास के क्षेत्र में अपनी उच्चकोटि की रचनाओं के कारण प्रेमचन्द को उपन्यास सम्राट कहा गया। 'गोदान', 'गबन', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', तथा 'निर्मला' उनके श्रेष्ठ उपन्यास हैं। प्रेमचन्द युग में तथा उसके बाद भी उपन्यास-साहित्य को समृद्ध करने वाले उपन्यासकार थे जयशंकर प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, विश्वंभर नाथ शर्मा, इलाचन्द्र जोशी, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, भगवतीचरण वर्मा, उपेन्द्र नाथ अश्क, जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल, नागार्जुन, फणीश्वर नाथ रेणु, हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा अमृत लाल नागर।

एकांकी नाटक की एक अन्य विधा है। एकांकी का अर्थ है एक अंक का नाटक। समय की कमी के कारण एकांकी नाटकों का विकास हुआ। जयशंकर प्रसाद की रचना 'एक घूँट' को हिन्दी की प्रथम एकांकी माना जाता है, परन्तु कुछ विद्वान डॉ. रामकुमार वर्मा को हिन्दी का प्रथम एकांकीकार मानते हैं। इनके एकांकी संग्रह हैं 'पृथ्वीराज की आंखें', 'रेशमी टाई' तथा 'कौमुदी महोत्सव'। उपेन्द्रनाथ अश्क, विष्णु प्रभाकर, भुवनेश्वर, उदयशंकर भट्ट, लक्ष्मीनारायण मिश्र तथा हरिकृष्ण प्रेमी प्रमुख एकांकीकार हैं।

बोध-प्रश्न

प्रश्न 1. जयशंकर प्रसाद के किन्हीं चार सुप्रसिद्ध नाटकों के नाम लिखिए।

उत्तर जयशंकर प्रसाद के चार सुप्रसिद्ध नाटक हैं अजात शत्रु, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी तथा स्कंदगुप्त।

प्रश्न 2. हिन्दी निबंध के विकास में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, वासुदेव शरण अग्रवाल, शान्तिप्रिय द्विवेदी तथा हजारी प्रसाद द्विवेदी का योगदान है। इसी क्रम में हिन्दी निबंध को गति देने वाले किन्हीं तीन सुप्रसिद्ध निबंध-लेखकों के नाम लिखिए।

उत्तर (1) विद्यानिवास मिश्र, (2) कुबेर नाथ राय, (3) हरिशंकर परसाई।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. राजा शिवप्रसाद और राजा लक्ष्मणसिंह के भाषा संबंधी दृष्टिकोण की तुलना कीजिए।

उत्तर राजा शिवप्रसाद उर्दूनिष्ठ हिन्दी के पक्षधर थे, जिसमें अरबी, फारसी के शब्दों की अधिकता है, जबकि राजा लक्ष्मण सिंह संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के पक्षधर थे। राजा लक्ष्मण सिंह ने हिन्दी-उर्दू को अलग-अलग भाषा माना।

प्रश्न 2. हिन्दी गद्य के विकास में मुद्रण के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर हिन्दी गद्य के विकास में मुद्रण का अत्यधिक महत्त्व रहा। मुद्रण की सहायता से किसी पुस्तक की हजारों प्रतियाँ बहुत ही कम समय में छापी जा सकती हैं तथा इन्हें दूर-दराज के क्षेत्रों में लोगों तक पहुँचाया जा सकता है। मुद्रण के विकास से सामग्री को कंठस्थ करने की आवश्यकता नहीं रही। इससे हिन्दी गद्य के विकास में पर्याप्त सहायता मिली।

प्रश्न 3. भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग के निबंधों में कोई दो अन्तर बताइए।

उत्तर भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग के निबंधों में दो अन्तर इस प्रकार हैं (1) भारतेन्दु युग के निबंधों में व्यंग्य और विनोद की प्रवृत्ति अधिक देखने को मिलती है, जबकि द्विवेदी युग के निबंधों में वैचारिकता और विश्लेषण की प्रधानता देखने को मिलती हे। (2) भारतेन्दु युग के निबंधों में भाषा अनगढ़ है, जबकि द्विवेदी युग के निबंधों की भाषा परिमार्जित है।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्रश्न 4. द्विवेदी युग के संदर्भ में 'सरस्वती' की भूमिका का विवेचन कीजिए।

उत्तर 'सरस्वती' पत्रिका ने राष्ट्रीय आकांक्षा को स्वर दिया। इस पत्रिका ने ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में लेखन-कार्य को प्रोत्साहित किया। पत्रिका ने सामाजिक नवजागरण की भावनाओं की अभिव्यक्ति पर अधिक जोर दिया। सरस्वती पत्रिका ने गद्य की विभिन्न विधाओं (उपन्यास, नाटक, कहानी) के लेखन को प्रोत्साहन दिया। बड़े-से बड़ा लेखक 'सरस्वती' पत्रिका में अपना लेख छपने से गौरव का अनुभव करता था।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. हिन्दी गद्य की पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में खड़ी बोली गद्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर खड़ी बोली को आम बोलचाल की भाषा माना जाता है। धीरे-धीरे साहित्य में इसका प्रयोग किया जाने लगा। गद्य की रचनाएं भी खड़ी बोली में की जाने लगीं। खड़ी बोली के विकास में तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। 14वीं शताब्दी में दिल्ली तथा इसके आस-पास के क्षेत्रों में खड़ी बोली बोली जाने लगी थी। मुगल काल में खड़ी बोली को संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग किया गया। मुगलों ने शासन की सुविधा तथा जनता से संपर्क साधने के लिए खड़ी बोली का प्रयोग किया। मुगलों की मातृ-भाषा तुर्की थी, परन्तु उन्होंने राजकाज में फारसी भाषा का उपयोग किया। जब खड़ी बोली का प्रयोग सम्पर्क भाषा के रूप में आरंभ हुआ, तो फारसी मिश्रित खड़ी बोली से बोलचाल की एक नई शैली का जन्म हुआ। जो लोग शिक्षित थे, वे बोल-चाल के इस रूप को फारसी लिपि में लिखने लगे। इस नई शैली को उर्दू कहा गया। इसे हिन्दुई, हिन्दवी, रेखता आदि नामों से भी पुकारा गया। शायरों ने उर्दू भाषा में ही शायरी करनी आरंभ कर दी। 14वीं शताब्दी में अमीर खुसरो ने खड़ी बोली में पहेलियों और मुकरियों की रचना की। खड़ी बोली का विकास दक्षिणी राज्यों में भी हुआ। दक्षिण भारत में खड़ी बोली को दक्खिनी हिन्दी के नाम से जाना जाता था। 14वीं से 18वीं शताब्दी के मध्य दक्षिण भारत में अनेक साहित्यिक ग्रंथों की रचना हुई। जिनमें गद्य की रचनाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ख्वाजा बन्दा नवाज गैसू दराज (1322-1433), शाह मीरां जी (1496), बुरहाद्दीन जानम (1544-1583) तथा मुल्ला वजही जैसे साहित्यकारों ने काव्य रचनाओं के साथ-साथ गद्य में भी ग्रंथों की रचना की। मुल्ला वजही ने 1635 में प्रसिद्ध गद्य ग्रंथ 'सब रस' की रचना की।

खड़ी बोली के विस्तार में मुगल साम्राज्य ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जैसे-जैसे मुगल साम्राज्य का विस्तार होता गया, वैसे-वैसे खड़ी बोली का भी विस्तार होता गया। मुगलों के समय में खड़ी बोली का प्रयोग संपर्क भाषा के रूप में किया गया। 1707 ई. में मुगल सम्राट औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही मुगल साम्राज्य का पतन भी आरंभ हो गया। इस समय दिल्ली, आगरा जैसे शहरों के स्थान पर लखनऊ, पटना तथा मुर्शिदाबाद जैसे शहर समृद्ध होते गए। परिणामस्वरूप व्यापारी वर्ग व्यापार के लिए इन शहरों की ओर आकर्षित हुआ। पूर्वी भारत में व्यापारियों के विस्तार के साथ-साथ खड़ी बोली का भी विस्तार होता गया। धीरे-धीरे खड़ी बोली में गद्य की क्षमता का विकास होने लगा। खड़ी बोली गद्य का सबसे प्रमाणिक रूप हमें मुगल सम्राट अकबर के दरबारी कवि गंग की रचना 'चन्द छंद बरनन' की महिमा में देखने को मिलती है। इसका रचना काल 1570 ई. माना जाता है। खड़ी बोली गद्य का विकास धीरे-धीरे हुआ। कम समय में ही खड़ी बोली ने साहित्य में स्थान प्राप्त कर लिया। इसके बाद तेजी से खड़ी बोली गद्य का विकास हुआ।

प्रश्न 2. हिन्दी गद्य के विकास के कारणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर हिन्दी गद्य के विकास के निम्नलिखित कारण हैं

(1) ईसाई मिशनरियाँ ईसाई मिशनरियों ने हिन्दी गद्य के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत में हिन्दू तथा मुस्लिमों के अतिरिक्त ईसाई भी बड़ी संख्या में रहते हैं। दक्षिण भारत के केरल तथा पूर्वी भारत के राज्यों में ईसाई धर्म को मानने वाले काफी संख्या में रहते हैं। जब अंग्रेजों ने भारत में अपना शासन स्थापित कर लिया, तो ईसाई धर्म प्रचारकों ने भी भारत में अपनी गतिविधियां तेज कर दीं। धर्म प्रचार के लिए ईसाई धर्म प्रचारकों ने भारतीय भाषाओं का सहारा लिया। इनमें हिन्दी भी एक थी। 19वीं सदी में ईसाई धर्म प्रचारकों ने ईसाई धर्म के प्रचार के लिए हिन्दी गद्य में अनेक पुस्तकें तैयार करवायीं। इस प्रकार इन्होंने हिन्दी गद्य के विकास में योगदान दिया। धर्म प्रचार के लिए ईसाई धर्म-प्रचारकों ने जनता की भाषा का प्रयोग किया। हिन्दी गद्य में छोटी-छोटी पुस्तिकाओं तथा 'बाइबिल' के हिन्दी अनुवाद से जहां ईसाई धर्म के प्रचार को गति मिली, वहीं हिन्दी गद्य के विकास में भी सहायता मिली।

(2) नवीन आविष्कार अंग्रेजों ने भारत में अपने साम्राज्य को मजबूत बनाने के लिए मुद्रण, यातायात और संचार के नये साधनों का प्रयोग किया। अंग्रेजों ने 1844 से 1856 के मध्य देश के दूर-दराज के क्षेत्रों को रेल एवं तार से जोड़ दिया। संचार के साधनों तथा रेल ने भारतीय जनजीवन में एक बड़ा परिवर्तन ला दिया। मुद्रण के विकास के कारण बड़ी संख्या में विभिन्न भाषाओं में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन संभव हो सका। यातायात के साधनों ने इन पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों को अन्य शहरों में पहुँचाना आरंभ कर दिया। इससे गद्य-लेखन का भी विस्तार होता गया।

(3) शिक्षा का विस्तार 1835 में अंग्रेजी भाषा को शिक्षा का माध्यम बना दिया गया। इससे पहले भारत में शिक्षा संस्कृत तथा फारसी भाषा में दी जाती थी। राजा राममोहन राय ने भी अंग्रेजी भाषा का समर्थन किया, क्योंकि वे मानते थे कि संस्कृत तथा फारसी भाषा से भारत नये युग में प्रवेश नहीं कर सकता है। अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाये जाने का लाभ भी हुआ। अंग्रेजी भाषा के अध्ययन से भारतीयों को पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति की गहन जानकारी प्राप्त हुई। स्कूल कॉलेजों में अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी-उर्दू की भी शिक्षा दी जाती थी। सन 1800 ई. में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हुई। 1803 ई. से कॉलेज में हिन्दी-उर्दू की पढ़ाई आरंभ हो गई थी। 1823 में आगरा कॉलेज की स्थापना हुई, जिसमें हिन्दी के अध्ययन की सुविधा थी। 1817 ई. में 'कलकत्ता स्कूल बुक सोसाइटी' तथा 1833 में 'आगरा स्कूल बुक सोसायटी' की स्थापना हुई। इन संस्थाओं ने हिन्दी गद्य में अच्छे-अच्छे ग्रंथ तैयार करवाये। जिससे हिन्दी गद्य के विकास में पर्याप्त सहायता मिली।

(4) समाज-सुधार आन्दोलन 19वीं सदी में भारत में कई समाज सुधार आन्दोलनों की शुरुआत हुई। इन आन्दोलनों ने भी हिन्दी गद्य के विकास में पर्याप्त योगदान दिया। इन आन्दोलनों का मुख्य उद्देश्य था, भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करना तथा जनता में अपने देश और धर्म के प्रति चेतना जगाना। जनता तक संदेशों को पहुँचाने के लिए जनता की भाषा का होना आवश्यक था।

www.neerajbooks.com